भारतीय वाङ्मय

वर्ष 1 | अप्रैल-मई-जून 2000 | अंक 2

हिन्दी पुस्तकों के पाठक कहाँ

हिन्दी पुस्तकों के पाठक क्यों नहीं हैं? इस पर विचार करने की अपेक्षा है। पाठक सहसा उत्पन्न नहीं होते, प्रारम्भ में अध्ययन काल से ही पढ़ने की प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति कैसे जागृत हो? स्कूलों में पहले पुस्तकालय के लिए एक कक्षा होती थी जहाँ छात्र पत्र-पत्रिका व रोचक पुस्तकें पढ़ते थे, उनमें पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत होती थी। अध्यापक भी उन्हें पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। किन्तु आज स्थिति यह है कि पाठ्य पुस्तकों का स्थान कुंजी और गाइड ने ले लिया है। पाठ्य पुस्तकें ही नहीं पढ़ी जाती, ऐसी स्थिति में अन्य पुस्तकों की बात सोचना ही व्यर्थ है। इसके लिए छात्रों को ही दोषी नहीं ठहराना चाहिए, अध्यापक और विद्यालय भी इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। अध्यापकों को पढ़ने का शौक नहीं, विद्यालयों में नियमित पुस्तकालय नहीं। सारा ज्ञान कूप मंडूकता की ओर ले जा रहा है।

मिशनरियों द्वारा संचालित अंग्रेजी स्कूल तथा आधुनिक अंग्रेजी स्कूल बच्चों को पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिका पढ़ने को प्रेरित करते हैं। सामयिक तथा अन्य विषयों पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने को प्रेरित करते हैं, इससे उनमें पढ़ने की रुचि जागृत होती है।

आज हमारी शिक्षा पद्धति औपचारिकता मात्र रह गई है। स्वतंत्रता के 52 वर्ष बाद भी साक्षरता से अभी हम दूर हैं। साक्षरता ही मनुष्य को स्वावलम्बी बनाती है। किन्तु आज देश की सारी योजनाएँ—साक्षरता आन्दोलन, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा, पुस्तकालय, विकास योजनाएँ सभी राजनीति और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई हैं।

क्या देश के नेता इस देश की जनता को अपने अधिकारों की जानकारी करने देंगे, उनके व्यक्तित्व का विकास कर उन्हें स्वावलम्बी बनने देंगे? तभी देश में नागरिक जागरूक होंगे, उनमें ज्ञान प्राप्ति की इच्छा जागृत होगी और एक सशक्त पाठक वर्ग का निर्माण होगा, जो प्रकाशकों को ही नहीं लेखकों को भी प्रभावित करेगा।

'सरस्वती' की जन्म शताब्दी

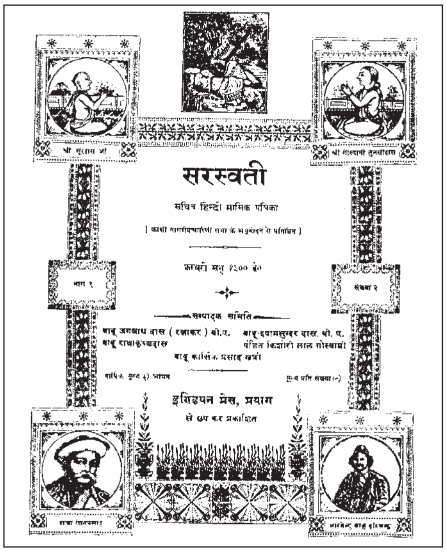

सरस्वती : हिन्दी की जातीय पत्रिका

हिन्दी की इतिहास-प्रसिद्ध जातीय पत्रिका 'सरस्वती' का प्रथम अंक जनवरी सन् 1900 ई० में प्रकाशित हुआ था। सन् 2000 ई० इसके प्रकाशन का शताब्दी-वर्ष है। इस वर्ष में इस पत्रिका के सम्बन्ध में हिन्दी की नयी पीढ़ी को कुछ ज्ञातव्य बातें बताना आवश्यक है। इसके मुख पृष्ठ पर ऊपर बाईं तरफ 'सूरदास', दाहिनी तरफ 'तुलसीदास' और बीच में देवी 'सरस्वती' के चित्र प्रकाशित होते थे। नीचे बाईं तरफ राजा 'शिवप्रसाद' और दाहिनी तरफ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के चित्र छपते थे। बीच में 'इण्डियन प्रेस, प्रयाग से छपकर प्रकाशित' अंकित रहता था। ऊपर के तीन और नीचे के दो चित्रों के बीच में जो जगह बचती थी उसमें ऊपर बड़े टाइप में 'सरस्वती' लिखा रहता था, उसके नीचे छोटे टाइप में 'सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका' और उससे भी नीचे बहुत महीन अक्षरों में ब्रैकेट के भीतर 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अनुमोदन से प्रतिष्ठित' छपता था। पत्रिका की संपादन-समिति के सदस्य थे—बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी०ए०, बाबू राधाकृष्णदास, बाबू श्यामसुन्दरदास बी०ए०, पंडित किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री। इस सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दरदास ने 'मेरी आत्मकहानी' में लिखा है—"पहले वर्ष इन पाँचों व्यक्तियों के सम्पादकत्व में यह पत्रिका निकली, पर वास्तव में इसका सारा बोझ मेरे ऊपर था। लेखों का संग्रह करना, उन्हें दुहराकर ठीक करना तथा आवश्यकता होने पर उनकी नकल करवाना और अंत में प्रूफ देखना यह सब मेरा काम था। इसके लिए प्रेस से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं मिलती थी। इस अवस्था से अवगत होकर बाबू चिन्तामणि ने यह निश्चय किया कि मैं ही इसका संपादक रहूँ। एक क्लर्क तथा डाक व्यय आदि के लिए प्रेस 20 रुपये मासिक देता था और उसका हिसाब प्रतिमास प्रेस को भेज दिया जाता था। इस प्रकार 1901 और 1902 में 'सरस्वती' निकलती रही और एक प्रकार से चल भी निकली। अंत में मेरे प्रस्ताव पर यह निश्चय हुआ कि 'सरस्वती' के संपादन का स्वतंत्र प्रबन्ध होना चाहिए। मेरे अलग होने का मुख्य कारण समय का अभाव और मेरी आर्थिक कृच्छता थी। इसके संपादक पंडित महावीरप्रसाद चुने गये।" (मेरी आत्मकहानी, पृ० 117-18) इस प्रकार सन् 1903 से महावीरप्रसाद ने 'सरस्वती' का संपादन आरम्भ किया। इस समय 'सरस्वती' का वार्षिक मूल्य 3 रुपये था। संपादक के रूप में द्विवेदीजी को 20 रुपये मासिक मिलते थे।

'सरस्वती' को राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका बनाने के लिए द्विवेदीजी ने अन्य भाषाओं की प्रख्यात पत्रिकाओं को बराबर अपने सामने रखा। उस समय रामानन्द चटर्जी 'प्रवासी' पत्रिका निकालते थे। द्विवेदीजी इन्हें अपना गुरु मानते थे। इनसे उन्होंने संपादकीय लिखने की कला सीखी। 'मराठी' में प्रकाशित होने वाली दो

पत्रिकाओं—'केरल कोकिल' और 'महाराष्ट्र कोकिल' का आदर्श भी उनके सामने था। 'सरस्वती' के प्रकाशन के कुछ बाद रामानन्द चटर्जी के संपादन में 'मॉडर्न रिव्यू' अंग्रेजी पत्रिका निकली। द्विवेदीजी ने इस पत्रिका से चित्र-प्रकाशन शैली और सामग्री की गंभीरता के तत्त्व ग्रहण किए। उन्होंने किसी का भी अंधानुकरण नहीं किया। सबसे उपयोगी तत्त्व लेकर सरस्वती को निखारा। उस समय शायद ही किसी संपादक की दृष्टि इतनी व्यापक और सूक्ष्म रही हो। शायद ही कोई संपादक अपनी नीति के प्रति इतना कठोर और निष्ठावान रहा हो। द्विवेदीजी के लिए संपादन कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं थी। वह एक प्रकार का आत्मदान था। अपने को मिटाकर उन्होंने 'सरस्वती' की जो भव्य प्रतिमा निर्मित की वह आज भी श्लाघ्य है। 1907 ई० तक 'सरस्वती' हिन्दी के लेखकों, कवियों और पाठकों के बीच पूर्णत: प्रतिष्ठित हो गई थी।

'सरस्वती' शुद्ध साहित्यिक पत्रिका नहीं थी, उसमें 'विज्ञान', 'इतिहास', 'भूगोल', 'अर्थशास्त्र', 'शिक्षाशास्त्र', 'नृशास्त्र', 'धर्मशास्त्र', 'अध्यात्म', 'दर्शन' आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित निबन्ध प्रकाशित होते थे। इन निबन्धों को सहज बोधगम्य शैली में प्रस्तुत करने में द्विवेदीजी को असाधारण श्रम करना पड़ता था। द्विवेदीजी 'ज्ञान-राशि के संचित कोश' को साहित्य मानते थे। उन्होंने 'सरस्वती' को साहित्य की इसी कसौटी पर खरा प्रमाणित कर दिया।

द्विवेदीजी हिन्दी के रचनात्मक-साहित्य के प्रति भी उतने ही सजग और सतर्क थे। उन्होंने 'खड़ी बोली' को हिन्दी-काव्य-भाषा के रूप में ढाल दिया। हिन्दी-गद्य की सभी विधाओं—निबन्ध, कहानी, आलोचना, यात्रावृत्त, जीवनी, संस्मरण आदि—को विकसित और पुष्ट किया और सब मिलाकर देखा जाय तो 'सरस्वती' के माध्यम से ही उन्होंने हिन्दी-साहित्य के इतिहास में एक नये युग का निर्माण कर दिया। देखते-देखते 'सरस्वती' ने पूरे हिन्दी-भाषी क्षेत्र में एक नवीन चेतना, नवीन जागृति और नवीन स्फूर्ति भर दी। उस समय विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का श्रीगणेश नहीं हुआ था। कहना न होगा कि कुछ अपवादों को छोड़कर 1900 से 1920 ई० तक 'सरस्वती' हिन्दी-भाषा और साहित्य की शिक्षा का अन्यतम स्रोत भी बनी रही। द्विवेदी-युग के प्रख्यात कवि नाथूराम 'शंकर' शर्मा ने 1907 में 'सरस्वती की महावीरता' शीर्षक एक लम्बी कविता लिखी थी। उस समय 'सरस्वती' क्या थी ? और उसे किस रूप में देखा जाता था, यह जानने के लिए इस कविता से परिचित होना आवश्यक है। इसके दो छन्द यहाँ उद्धृत किए जा रहे हैं—

साहसी सुजान को सुपन्थ दरसाती रहे
कायर कुचालियों की गैल गहती नहीं।
भिक्षुक विचारशील साधु को सपूत कहै
पापी धनवान को प्रतापी कहती नहीं॥
उद्यमी उदार के सुकर्म का प्रकाश करै,
आलसी वलिष्ठ की बड़ाई सहती नहीं।
शंकर निशंक महावीरता सरस्वती की
कोरे बकवादियों के पास रहती नहीं॥

■

नूतन निबन्ध मन भावने विचित्र चित्र
नाना विषयों से वर वानिक बनाती है।
शंकर प्रतापशील सज्जन महोदयों के,
जीवन चरित्र जन-जन को जनाती है॥
हिन्दी को सुधार गद्य पद्य का प्रचार करै,
रूठी ब्रजभाषा को भी सादर मनाती है।
ज्ञानी ग्राहकों से महावीरता सरस्वती की,
लेख अलबेले अंक अंक में गिनाती है।

आज, जब 'पत्रकारिता' एक व्यवसाय बन चुकी है और संपादन-कला 'सूचना' का पर्याय बनती जा रही है, हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपनी इस अमूल्य धरोहर को, कम से कम, अपनी स्मृति में तो सजीव रखें।

सरस्वती सदन — **डॉ० रामचन्द्र तिवारी**
बेतियाहाता, गोरखपुर

कलकत्ता के भारतीय भाषा परिषद् सभागार में श्री मिलाप दूगड़ की प्रथम काव्य-पुस्तक **'पीयूष-दंश'** का लोकार्पण हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री द्वारा 9 जनवरी 2000 को सम्पन्न हुआ।

■ ■ ■

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित डॉ० मदालसा व्यास के ग्रन्थ **हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई** का लोकार्पण हिन्दी साहित्य अनुसंधान मण्डल, मुम्बई विश्वविद्यालय द्वारा—चित्र में डॉ० मदालसा व्यास, डॉ० शशि मिश्र, डॉ० राम मनोहर त्रिपाठी एवं डॉ० रमेश कुन्तलमेघ।

सम्मान-पुरस्कार

मंगलाप्रसाद पुरस्कार

पद्मभूषण **डॉ० विद्यानिवास मिश्र** को उनकी कृति 'वसंत आ गया, पर कोई उत्कंठा नहीं' पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 1999 का बहुप्रतिष्ठित 'मंगलाप्रसाद पारितोषक' पुरस्कार।

श्रुतिकीर्ति स्मृति संस्थान

साहित्य के क्षेत्र में सम्पूर्ण अवदान के लिए अखिल भारतीय स्तर पर श्रुतिकीर्ति स्मृति संस्थान, बरहज (देवरिया) द्वारा सन् 2000 का 'शिखर सम्मान' **पं० विद्यानिवास मिश्र** को इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि, प्रशस्ति-पत्र, शाल तथा नारियल तथा स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

भाषा शिरोमणि

राजभाषा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हरिऔध कला भवन आजमगढ़ में उ०प्र० भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष **डॉ० कन्हैया सिंह** को 'भाषा शिरोमणि' का स्वर्ण पदक नागरिकों की ओर से चाँदी के थाल में रखकर पाँच हजार एक रुपये की राशि प्रदान की गई।

वेद-वेदांग पुरस्कार

संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् पद्मश्री **डॉ० कपिलदेव द्विवेदी** को आर्य समाज, सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा 'वेद-वेदांग पुरस्कार' से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण ट्राफी, 25 हजार रुपये तथा मोतियों की माला प्रदान की जायेगी।

■ ■ ■

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, उत्तर प्रदेश की ओर से गोरखपुर में आयोजित प्रान्तीय अधिवेशन में गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध चिन्तक एवं आलोचक **डॉ० रामचन्द्र तिवारी** को उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री कलराज मिश्र ने प्रतीक चिन्ह, उत्तरीय एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया।

■ ■ ■

भारतीय प्रकाशन उद्योग के प्रमुख स्तम्भ **श्री दीनानाथ मल्होत्रा** को भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया है। भारतीय प्रकाशन उद्योग विशेषकर हिन्दी प्रकाशन जगत के लिए यह गौरव की बात है। दीनानाथजी को 'भारतीय वाङ्मय' की विनम्र बधाई।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रमुख प्रकाशन

हिन्दी साहित्य

साहित्य शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि (पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य) *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 150
काव्यशास्त्र *डॉ. भगीरथ मिश्र* 150
नया काव्यशास्त्र *डॉ. भगीरथ मिश्र* 80
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद *डॉ. भगीरथ मिश्र* 150
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ. भगीरथ मिश्र* 50
आलोचक का दायित्व *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 40
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख तथा डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त* 100
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीक सहित) *डॉ. चण्डिकाप्रसाद शुक्ल* 50
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ. अर्चना श्रीवास्तव* 50
शब्द-शक्ति-विवेचन *डॉ. रामलखन शुक्ल* 40
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव *डॉ. रवीन्द्रसहाय वर्मा* 40
जनवादी समझ और साहित्य *डॉ. रामनारायण शुक्ल* 50
प्रगतिशील हिन्दी आलोचना की रचना-प्रक्रिया *डॉ. हौसिलाप्रसाद सिंह* 60
नवस्वच्छन्दतावाद *डॉ. अजब सिंह* 60
यथार्थवाद पुनर्मूल्यांकन *डॉ. अजब सिंह* 100

व्याकरण, भाषा और कोश

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग) *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 150
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ. विजयपाल सिंह* 80
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना ,, 65
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा *डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री* 50
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *कपिलदेव द्विवेदी* 200
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. भोलाशंकर व्यास* 100
पूर्वी अपभ्रंश भाषा *डॉ. राधाकान्त मिश्र* 80
हिन्दी का सांस्कृतिक परिवेश *डॉ. लालजी सिंह* 50
कोश-विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग *डॉ. हरदेव बाहरी* 100
हिन्दी में अनेकार्थता का अनुशीलन *डॉ. त्रिभुवन ओझा* 100
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. शुकदेव सिंह* 40
मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण *डॉ. माताबदल जायसवाल* 250
लिपि, वर्तनी और भाषा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 30
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति ,, 40
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश ,, 200
सिद्धार्थ पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश (छात्रोपयोगी) *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 40

साहित्य समीक्षा

हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ. मदालसा व्यास* 200
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ. रतनकुमार पाण्डेय* 400
टूटते हुए गाँव का दस्तावेज (लोक ऋण : बनगंगी मुक्त है) *सं. डॉ. सर्वजीत राय* 40
आधुनिक काव्य में फन्तासी की प्रासंगिकता *डॉ. छोटेलाल दीक्षित* 40
वाग्धारा *सं. डॉ. अवधेशप्रसाद सिंह* 150
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ *डॉ. रामकली सराफ* 200
जनवादी समझ और साहित्य *डॉ. रामनारायण शुक्ल* 50
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
चेतना, शिक्षा एवं संस्कृति *डॉ. अजब सिंह* 80
यथार्थवाद : पुनर्मूल्यांकन *डॉ. अजब सिंह* 100
राष्ट्रीयता का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य *डॉ. सुदर्शन पंडा* 120
केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास *डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर* 250
नवलेखन : समस्याएँ और संदर्भ *डॉ. श्यामसुन्दर घोष* 40
हिन्दी का गद्य-साहित्य *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 400
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास *डॉ. लाल साहब सिंह* 50
मानस विमर्श (दो भाग) *डॉ. भगीरथ दीक्षित* 300
कविवर बिहारी *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'* 40
तुलसीदास : विभिन्न दृष्टियों का परिप्रेक्ष्य *गोरखपुर विश्वविद्यालय* 40
क्रांतिकारी कवि निराला *डॉ. बच्चन सिंह* 80
निबन्धकार पं. विद्यानिवास मिश्र *श्रुति मुखर्जी* 50
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ. अनन्तकीर्ति तिवारी* 80
नाटक तथा रंग-परिकल्पना *डॉ. गिरीश रस्तोगी* 40
हिन्दी काव्य में दलित काव्यधारा *माताप्रसाद* 150

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 70
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश ,, 50

अज्ञेय साहित्य-समीक्षा

अज्ञेय : चेतना के सीमान्त *डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान* 80
अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन ,, 40
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ *डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान* 80
अज्ञेय की गद्य-शैली *डॉ. सावित्री मिश्र* 50
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी' *डॉ. अनन्तकीर्ति तिवारी* 40

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा) *डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 20
प्रसाद तथा आँसू (मूल) *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 8
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 20
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16

प्रेमचंद साहित्य

कर्मभूमि *प्रेमचंद* 40
निर्मला *प्रेमचंद* 25
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 25
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 40

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ. जयदेव सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी 70
द्वितीय खंड : सबद 250
तृतीय खंड : साखी 125
कबीर काव्य कोश *डॉ. वासुदेव सिंह* 150
कबीर वाणी पीयूष *डॉ. जयदेव सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह* 40
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. शुकदेव सिंह* 40
कबीर की भाषा *डॉ. माताबदल जायसवाल* 50
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ. शुकदेव सिंह* 130
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं. डॉ. भगवानदेव पाण्डेय* 150
कबीर और अखा : तुलनात्मक अध्ययन *डॉ. रामनाथ घूरेलाल शर्मा* 80

शोध-ग्रंथ

मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ *डॉ. रामेश्वर मिश्र* 80
ब्रजभाषा और ब्रजबुलि साहित्य *डॉ. कणिका तोमर* 60
बिहार का संस्मरण साहित्य *डॉ. आशाकुमारी* 60
प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन *डॉ. त्रिभुवन ओझा* 100
रीतिकालीन वीर-काव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ. शिवनारायण सिंह* 90
नवस्वच्छन्दतावाद *डॉ. अजब सिंह* 60
उपरूपकों का उद्भव और विकास *डॉ. इन्द्रा चक्रवाल* 100
जयशंकर प्रसाद और लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन *शशिशेखर नैथानी* 100
मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य *डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 120
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी-काव्य और सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति *डॉ. चन्द्रभूषण सिन्हा* 65
आदिकालीन हिन्दी-साहित्य *डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय* 50
हिन्दी आलोचना और आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र *डॉ. रामबहादुर राय* 100

हिन्दी की वीर काव्यधारा — डॉ. बटेकृष्ण — 40

मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन का सामाजिक विवेचन — डॉ. सुमन शर्मा — 60

हिन्दी कविता : इस्लामी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में — डॉ. जमीला आली जाफरी — 60

शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य — डॉ. रामचन्द्र तिवारी — 100

महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य — डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह — 60

भुड़कुड़ा की सन्त-परम्परा — डॉ. इन्द्रदेव सिंह — 100

भारतेन्दुकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि — डॉ. कमला कानोड़िया — 100

हिन्दी रंगमंच और पं. नारायणप्रसाद बेताब — डॉ. विद्यावती नम्र — 150

राहुल सांकृत्यायन के गद्य-साहित्य का शैलीगत अध्ययन — डॉ. गुप्तेश्वरनाथ उपाध्याय — 60

पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव — डॉ. रवीन्द्रसहाय वर्मा — 40

निराला की काव्यभाषा — डॉ. शकुन्तला शुक्ल — 80

आधुनिकता और मोहन राकेश — डॉ. उर्मिला मिश्र — 80

आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास (1920-60) — डॉ. आशा किशोर — 80

शोध-सम्बन्धी

यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ — डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त — 10

शोध और समीक्षा — डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त — 60

शोध-संदर्भ : नये आयाम — डॉ. जमीला आली जाफरी — 40

लोक साहित्य

गंगाघाटी के गीत — डॉ. हीरालाल तिवारी — 100

लोकगीतों के संदर्भ और आयाम — डॉ. शान्ति जैन — 700

काव्य-ग्रंथ

जौहर — श्यामनारायण पाण्डेय — 100

परशुराम (खण्ड-काव्य) — श्यामनारायण पाण्डेय — 60

वेलि क्रिसन रुकमणी री — सं. डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित — 80

मिरगावती (कुतुबन कृत) — सं. डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त — 150

चांदायन (दाउद विरचित प्रथम हिन्दी सूफी प्रेम-काव्य) — डॉ. माताप्रसाद गुप्त — 100

कन्हावत (जायसी कृत) — डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त — 80

महाराष्ट्र के प्रिय संत और उनकी हिन्दी वाणी — डॉ. विनयमोहन शर्मा — 10

नेमिकुंजर कृत गजसिंह कुमार प्रबन्ध — डॉ. मदनगोपाल गुप्त — 10

भक्त भावन (ग्वालकवि कृत) — डॉ. प्रेमलता बाफना — 80

रीति काव्यधारा — डॉ. रामचन्द्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी — 50

कीर्तिलता और विद्यपति का युग — डॉ. अवधेश प्रधान — 40

सूर सञ्चयन — उर्मिला मोदी — 30

कविता-संग्रह

असीम कुछ भी नहीं — डॉ. सदानन्द शाही — 100

कंथा-मणि — कुबेरनाथ राय — 100

कसक — चमनलाल प्रद्योत — 70

गीताञ्जलि (रवीन्द्र की कविताओं का काव्यानुवाद) — डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर' — 60

कालिदास : मेघदूत (काव्यानुवाद) — डॉ. श्यामलाकान्त वर्मा — 20

माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः — डॉ. शम्भूनाथ सिंह — 50

झूम उठे मनवाँ (भोजपुरी गीत) — राहगीर — 50

आस्था के गीत अनास्था के बीच — डॉ. भानुशंकर मेहता — 40

जीतनाराइन की सरनामी कविताएँ — सं. माताप्रसाद त्रिपाठी — 60

कल सुनना मुझे — धूमिल — 25

दशाश्वमेध — राहगीर — 30

द्वन्द्व — अरुणकुमार केशरी — 60

पीयूष-दंश — मिलाप दूगड़ — 50

कहानी

अन्नपूर्णानन्द रचनावली (हास्य-व्यंग्य) — अन्नपूर्णानन्द — 150

आखिरी हँसी — निशांतकेतु — 30

समकालीन हिन्दी कथा-लेखिकाएँ — सं. डॉ. रामकली सराफ — 75

भुवनेश्वर की रचनाएँ — सं. डॉ. शुकदेव सिंह — 30

लाल हवेली — शिवानी — 60

सुबह हो गयी — वीरेन्द्रप्रसाद मिश्र — 30

दिल का पौधा — अलीम मसरूर — 35

मुद्रिका रहस्य — शरद जोशी — 60

तीसरा यात्री — डॉ. कुसुम चतुर्वेदी — 80

आँगन में उगी पौध — कुसुम चतुर्वेदी — 150

अभी ठहरो अन्धी सदी — नीरजा माधव — 125

उपन्यास

सागरी पताका — राधामोहन उपाध्याय — 250

मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) — प्रभुदयाल मिश्र — 120

मरने के बाद — परिपूर्णानन्द वर्मा — 30

नसीब अपना-अपना — विमल मित्र — 40

मुझे विश्वास है — विमल मित्र — 60

महाकवि कालिदास की आत्मकथा — डॉ. जयशंकर द्विवेदी — 80

गाँधी की काँवर — हरीन्द्र दवे — 40

बहुत देर कर दी — अलीम मसरूर — 60

मंगला — अनन्तगोपाल शेवड़े — 30

लोकऋण — डॉ. विवेकी राय — 50

बनगंगी मुक्त है — डॉ. विवेकी राय — 50

चौदह फेरे — शिवानी — 100

ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) — अखिलन — 25

बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) — रा. वीलिनाथन् — 50

नया जीवन — अखिलन — 60

आओ लौट चलें — श्री गणेशदत्त दूबे — 40

नाटक एकांकी

शताब्दी पुरुष — राजेन्द्रमोहन भटनागर — 100

भारत-दुर्दशा — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र — 8

श्रीचन्द्रावली नाटिका — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र — 16

अँधेर नगरी — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र — 12

महाकवि कालिदास — शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय' — 25

गंगाद्वार — पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र — 25

हास्यार्णव तथा उपालंभ-शतक (कविवर रसरूप) — सं. डॉ. बटेकृष्ण — 20

भास्कर वर्मण (ऐतिहासिक नाटक) — डॉ. हीरालाल तिवारी — 10

छोटे नाटक — सं. डॉ. शुकदेव सिंह — 22

भुवनेश्वर की रचनाएँ — सं. डॉ. शुकदेव सिंह — 30

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीरसागर — कुबेरनाथ राय — 120

जगत तपोवन सो कियो — डॉ. विवेकी राय — 100

किरात नदी में चन्द्र-मधु — कुबेरनाथ राय — 40

कहीं दूर जब दिन ढले — डॉ. गुणवन्त शाह — 40

भोर का आवाहन — डॉ. विद्यानिवास मिश्र — 20

कुछ महाभारत और — शशिकान्त — 20

लहर पन्थी — रामअधार सिंह — 10

जीवनी-संस्मरण-यात्रा-रेखाचित्र

सरदार माने सरदार — डॉ. गुणवंत शाह — 20

आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व — मुकुटबिहारी लाल — 50

हरिऔध शती स्मारक ग्रन्थ — डॉ. किशोरीलाल गुप्त — 50

जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे — शंकरदयाल सिंह — 40

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र — सं. डॉ. चौथीराम यादव — 20

संस्मरण और रेखाचित्र — सं. उर्मिला मोदी — 20

रेखाएँ और रेखाएँ — सुधाकर पाण्डेय तथा विश्वनाथप्रसाद तिवारी — 25

मेरा बचपन : मेरा गाँव, मेरा संघर्ष : मेरा कलकत्ता — रामेश्वर टांटिया — 50

वे दिन वे लोग — डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त — 60

बढ़ते कदम-बदलते आयाम — '' — 250

चित्र और चरित्र — विश्वनाथ मुखर्जी — 40

मुझे विश्वास है — विमल मित्र — 60

मेरे पुलिस सेवा के वे दिन — विश्वनाथ लाहिरी — 80

हारी हुई लड़ाई का वारिस (स्व. ठाकुरप्रसाद सिंह) — उमेशप्रसाद सिंह — 100

मुगल बादशाहों की कहानी : उनकी जबानी — अयोध्याप्रसाद गोयलीय — 40

मनीषी, संत, महात्मा

आद्य श्री शङ्कराचार्य : आविर्भाव काल (समीक्षा व निर्णय) — वी.राजगोपाल शर्मा — 25

करुणामूर्ति बुद्ध — डॉ. गुणवन्त शाह — 25

महामानव महावीर — डॉ. गुणवन्त शाह — 30

नीब करौरी के बाबा — डॉ. बदरीनाथ कपूर — 12

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा — डॉ. गिरिराज शाह — 100

सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) — हरिश्चन्द्र मिश्र — 50

सन्त रैदास — श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला — 60

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) — डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह — 300

साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) — पं. गोपीनाथ कविराज — 80

साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग-3) — '' — 50

कविराज-प्रतिभा — लक्ष्मीनारायण तिवारी — 64

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन — नन्दलाल गुप्त — 160

ज्ञानगंज — पं. गोपीनाथ कविराज — 80

पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी
सत्यचरण लाहिड़ी 120
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ. अर्जुन तिवारी* 50
भारत के महान योगी (भाग 1-2)
विश्वनाथ मुखर्जी 80
भारत के महान योगी (भाग 3-4) ʼʼ 100
भारत के महान योगी (भाग 5-6) ʼʼ 100
भारत के महान योगी (भाग 7-8) ʼʼ 80
भारत के महान योगी (भाग 9-10) ʼʼ 100
भारत की महान साधिकाएँ ʼʼ 40
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना.वि. सप्रे* 120
भुड़कुड़ा की सन्त-परम्परा *डॉ. इन्द्रदेव सिंह* 100
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 100
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य
डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह 60

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

वाग्विभव *प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 200
गुप्त भारत की खोज *पॉल ब्रंटन* 200
मारण पात्र (सत्य घटनाओं पर आधारित योग तांत्रिक कथा प्रसंग) *अरुणकुमार शर्मा* 250
वह रहस्यमयी कापालिक मठ ʼʼ 180
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी ʼʼ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क ʼʼ 200
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड)
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती 150
सोमतत्त्व *सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी
म.म.पं. गोपीनाथ कविराज 80
श्री साधना ʼʼ 50
दीक्षा ʼʼ 60
सनातन-साधना की गुप्तधारा ʼʼ 100
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज) ʼʼ 40
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन (अद्‌भुत लीला प्रसंग)
शारदाप्रसाद सिंह 40
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता) *डॉ. गुणवन्त शाह* 300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी (गीता) *(अनु.) ना.वि. सप्रे* 250
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खंडों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 325
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ. शुकदेव सिंह* 130
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 125
नीब करौरी बाबा के मधुर दिव्य प्रसंग
रामदास व गिरिराज शाह (यंत्रस्थ)
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद ʼʼ 100
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120
योग के विविध आयाम *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 40
दीर्घायु के रहस्य *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 50
मधुमेह और आहार *सं. डॉ. भानुशंकर मेहता* 100
माँ और शिशु *डॉ. भानुशंकर मेहता* 15
स्वास्थ्य का क ख ग *डॉ. भानुशंकर मेहता* 10
आबादी की बाढ़ *डॉ. भानुशंकर मेहता* 8
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए *डॉ. सत्येन्द्रनाथ राय* 50

संस्कृत व्याकरण तथा रचना

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 15
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 40
प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 200
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 70
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र ʼʼ 200
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन ʼʼ 400
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्)
ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी 20

साहित्यशास्त्र तथा समीक्षा

अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ. दशरथ द्विवेदी* 40
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख तथा डॉ. प्रेमस्वरूप गुप्त* 100
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ. दशरथ द्विवेदी* 40
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित)
डॉ. चण्डिकाप्रसाद शुक्ल 50
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ. शालग्राम द्विवेदी* 100
उपरूपकों का उद्भव और विकास *डॉ. इन्द्रा चक्रवाल* 100
संस्कृत साहित्य का इतिहास
डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी (यंत्रस्थ)
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ. शिवशंकर गुप्त* 80

कोश तथा भाषा शास्त्र

संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. भोलाशंकर व्यास 100
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 200
शिवराम त्रिपाठी कृत लक्ष्मीनिवास कोश (उणादि कोश) *डॉ. रामअवध पाण्डेय* 40

इतिहास, संस्कृति और कला (History, Art & Culture)

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Varma* 300
Textiles in Ancient India *Dr. Kiran Singh* 200
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150
Prinsep's Benares Illustrated
James Prinsep, Int. by Dr. O.P. Kejariwal 800
British Kumaon *P. Whalley*
Int. by R.S. Tolia, I.A.S. 250
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200
Life in Ancient India
Dr. Mahendra Pratap Singh 100
Vikramaditya of Ujjayini *Dr. Rajbali Pandey* 50
The Imperial Guptas, Vol. I-II
Dr. P.L. Gupta Each 150
Albiruni : An Eleventh Century Historian
Dr. Jai Shankar Mishra 60
The Administration of Avadh *T.P. Chand* 100
India under Wellesley *P.E. Roberts* 200
Growth of Political Awakening in U.P. (1858-1900) *Dr. Anand Shankar Singh* 250
Freedom Movement and Afterwards
Pt. Kamla Pati Tripathi 200
बेतवा की निजवार्ता *हरगोविन्द गुप्त* 100
दिल्ली सल्तनत (तराइन से पानीपत)
डॉ. गणेशप्रसाद बरनवाल 80
दक्षिण-पूर्व एशिया *डॉ. शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी* 30
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ. लल्लनजी गोपाल* 150
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ
डॉ. श्रीराम गोयल 50
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ. श्रीराम गोयल* 200
वाल्मीकियुगीन भारत *डॉ. मंजुला श्रीवास्तव* 200
बौद्ध तथा जैन धर्म *डॉ. महेन्द्रनाथ सिंह* 110
अयोध्या का राजवंश *नगीना सिंह* 60
भोजराज *डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित* 40
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ. चन्द्रदेव सिंह* 150
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो. ए.के. नारायण* 300
प्राचीन भारत *डॉ. राजबली पाण्डेय* 300
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक)
डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त 150
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई.)
डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त 120
गुप्त साम्राज्य *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 350
भारतीय वास्तुकला *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 150
भारत के पूर्वकालिक सिक्के ʼʼ 275
हमारे देश के सिक्के *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 15
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ (600 से 1200 ई.) *डॉ. ओंकारनाथ सिंह* 100
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु *डॉ. पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 200
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला *डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव* 200
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था
डॉ. रेणुका कुमारी 60
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ. शीला सिंह* 150
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ. महेशकुमार शरण* 175
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ. मारुतिनन्दन तिवारी व डॉ. कमल गिरि 150
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण (7वीं शती से 13वीं शती) ʼʼ 325
भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास (1857-1947) *डॉ. सुशीलमाधव पाठक* 60
इतिहास दर्शन *डॉ. झारखण्डे चौबे* 120
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार
डॉ. हीरालाल गुप्त 30

हिन्दू समाज : संघटन और विघटन
डॉ. पुरुषोत्तम गणेश सहस्त्रबुद्धे 50

क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ. सरोज रानी* 200

मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ. हरिशंकर श्रीवास्तव 80

भारतीय संस्कृति की रूपरेखा
डॉ. पृथ्वीकुमार अग्रवाल 150

दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ. निर्मला गुप्ता* 80

मुगल बादशाहों की कहानी : उनकी जबानी
अयोध्याप्रसाद गोयलीय 40

काशी का इतिहास *डॉ. मोतीचन्द्र* (यंत्रस्थ)

काशी की पाण्डित्य-परम्परा *पं. बलदेव उपाध्याय* 600

काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक
अध्ययन *डॉ. हरिशंकर* 300

वाराणसी के स्थाननामों का सांस्कृतिक
अध्ययन *डॉ. सरितकिशोरी श्रीवास्तव* 250

काशी का रंग परिवेश *कुँवरजी अग्रवाल* 100

बना रहे बनारस *विश्वनाथ मुखर्जी* 40

स्वतन्त्रता-आन्दोलन और बनारस *ठाकुरप्रसाद सिंह* 120

एक संस्कृति : एक इतिहास *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 250
(250 वर्ष के सांस्कृतिक संक्रमण की महागाथा)

चित्रकला

भारतीय चित्रकला के मूल स्रोत *डॉ. भानु अग्रवाल* 400

कला *हंसकुमार तिवारी* 150

समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप और विकास
सं. डॉ. सत्येन्द्र त्रिपाठी 60

ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक
अनुशीलन *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 200

भारद्वाज : पूर्वज और वंशज *विश्वनाथ भारद्वाज* 560

क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ. सरोज रानी* 200

समाजशास्त्र *मारिस गिन्सबर्ग* 25

सामाजिक जनांकिकी *नीलकंठ शा. देशपांडे* 80

भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ. शिवशंकर गुप्त* 80

समाज-दर्शन की भूमिका *डॉ. जगदीशसहाय श्री०* 80

सामाजिक मनोविज्ञान *व.वि. अकोलकर* 25

अपराध के नये आयाम तथा
पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50

भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80

सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका
चमनलाल प्रद्योत 40

अरविंद-दर्शन की भूमिका *एस.के. मैत्रा* 20

सोमतत्त्व *प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100

वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180

मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
डॉ. (श्रीमती) गायत्री 150

विकासवाद और श्री अरविन्द *डॉ. जयदेव सिंह* 20

Modern Indian Mysticism (3 Vols.)
Sobharani Basu 150

शिक्षा (Education)

Educational and Vocational Guidance
in India *Dr. K.P. Pandey* 300

Teaching of English in India “ 300

शैक्षिक अनुसंधान *डॉ. के.पी. पाण्डेय* 100

शिक्षा मनोविज्ञान के मूल आधार *सत्यव्रत तिवारी* 50

सतत शिक्षा का सामुदायिक स्वरूप
डॉ. यागेन्द्रनारायण मिश्र 60

शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन *सत्यदेव सिंह* 40

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ. अर्जुन तिवारी* 100

प्रेस विधि *डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा* 150

मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता *डॉ. कैलाश नारद* 60

संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता
डॉ. अशोककुमार शर्मा 300

समाचार और संवाददाता
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 80

संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50

स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और
पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी *डॉ. अर्जुन तिवारी* 120

हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40

आधुनिक पत्रकारिता *डॉ. अर्जुन तिवारी* 80

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और
साहित्यिक पत्रकारिता *इन्द्रसेन सिंह* 120

Mass Communication & Development
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250

Journalism by Old and New Masters
(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta 250

Modern Journalism & Mass Communication
(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta 250

संगीत

भारतीय संगीत का इतिहास
डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह 300

प्रणव-भारती *पं. ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300

भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन
डॉ. विमला मुसलगाँवकर 400

Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450

सैन्य विज्ञान (Military Science)

ब्रिटिश शासन और भारतीय जासूस *धर्मेन्द्र गौड़* 100

भारतीय वाङ्मय

भारतीय वाङ्मय केवल साहित्यिक घटनाओं का आकलन ही नहीं करता, अपितु समकालीन और प्राक्कालीन साहित्यिक चेतना की विविध भंगियों को समानान्तर रूप से स्पष्ट करता है। इस प्रकार इसमें स्मृति जीविता और कृति जीविता, दोनों प्रकार के सचित्र सारस्वत समाचारों का रोचक परिवेश हुआ है। कलावरेण्य प्रस्तवन एवं शुद्ध मुद्रण इस त्रैमासिक की निजता है, जो अन्यत्र प्राय: दुर्लभ रहती है। मेरा अशेष साधुवाद स्वीकार करें। ‘भारतीय वाङ्मय’ विश्वविद्यालय प्रकाशन की स्पृहणीय गरिमा का उद्घोष करने वाला एक सार्थक त्रैमासिक है।

डॉ० श्रीरंजन सूर्यदेव, पटना

लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम

लेखक : **डॉ० शान्ति जैन**

पृ० 712 सात सौ रुपये

लोकगीत भारतीय संस्कृति की अनूठी धरोहर हैं। परम्परा से प्राप्त, जनजीवन से जुड़े, काव्य रस से ओत-प्रोत, स्वर सने, लय-लसे, हृदय तल से उभरे ये लोकगीत हमारे साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। ये सही अर्थों में हमारे सामाजिक जीवन के दर्पण हैं।

मंदिरों में गूँजते प्रार्थना के स्वर, मस्जिदों की अजान, गुरुद्वारों के शब्द कीर्तन, खेतों में लहलहाती फसलों के बीच और घरों में चक्की चलाते हुए हाथों की चूड़ियों की खनक के बीच लोकगीतों के मीठे स्वरों में इस देश की संस्कृति साकार रही है। लोकगीतों का विस्तार कहाँ से कहाँ तक है, यह कोई नहीं बता सकता, किंतु इनमें सदियों के धार्मिक विश्वास एवं परम्पराएँ जीवित हैं।

शाश्वत सत्य है कि लोकगीतों में हमारे संस्कारों की आत्मा है। ये भावपूर्ण अमृत कलश हैं। ये श्रुति साहित्य की भाषा परम्परा का सबसे प्रामाणिक भाष्य हैं। श्रुति परम्परा का इस विधा में कृत्रिमता का कोई स्थान नहीं है। हर भाषा, हर ऋतु, हर रंग में गाये जाने वाले ये गीत सहज ही मानस मन को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। लोकगीतों की यह भाषा यदि समझ से परे भी हो तो भी इनका स्वर और लय मन को बाँध लेते हैं।

लोकगीतों में संवेदना की वह तपिश होती है जिसकी आँच हर हृदय को लगती है। इनमें अनुभूतियों की वह शीतलता होती है जो संघर्षों से जूझते, श्रम-श्रांत व्यक्ति के लिए अमृत बन कर बरसती है।

लोक-साहित्य की समानता उपनिषदों से भी की जा सकती है। क्योंकि दोनों में सहज सत्य की प्राप्ति का प्रयास देखा जा सकता है।

डॉ० शान्ति जैन ने प्रस्तुत पुस्तक में इन गीतों के साहित्यिक सौंदर्य के विश्लेषण, विवेचन के साथ उनके सांगीतिक पहलुओं पर भी समुचित प्रकाश डालने का प्रयास किया है। यह पुस्तक पाठकों के समक्ष लोकगीतों के माध्यम से समग्र जनजीवन का जीवंत चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है।

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

चौदहवाँ विश्व पुस्तक मेला

सहस्राब्दी के प्रथम क्रम में चौदहवाँ विश्व पुस्तक मेला नई दिल्ली में 6 फरवरी से 13 फरवरी 2000 आयोजित हुआ। मेले में हिन्दी पुस्तकों के प्रतिदिन औसतन दस पुस्तकों के विमोचन हुए। मेले में प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, गालिब, मीर की रचनाओं तथा सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, नेहरू, अम्बेडकर की जीवनियाँ अधिक थीं। दलित साहित्य तथा ओशो साहित्य भी काफी बिका। बिक्री में पेपरबैक पुस्तकों की प्रमुखता रही।

■ ■ ■

भारत में किताबों की दुकानों की भारी कमी है। स्थिति यह है कि ग्राहकों को किताबों तक पहुँचना पड़ रहा है, किताबें उन तक नहीं पहुँच पा रही हैं। सरकारी खरीद की अवधारणा बुरी नहीं है क्योंकि जब यह शुरू की गई थी तो इसका उद्देश्य पुस्तकालय आन्दोलन को बढ़ावा देना था।

सबसे बड़ी जरूरत एक राष्ट्रीय पुस्तक नीति के निर्माण की है। बंग्लादेश, श्रीलंका जैसे देश के पास भी पुस्तक नीति हैं पर भारत के पास अभी तक कोई राष्ट्रीय पुस्तक नीति नहीं है। आज पुस्तक आन्दोलन की जरूरत है। जरूरत है डाक दरें कम करने की ताकि किताबें गाँव-गाँव पहुँचाई जा सकें।

—निर्मल कांति भट्टाचार्या
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट

अगले बीस सालों में कम्प्यूटर क्रांति हमें काफी कुछ नया दिखाएगी। बच्चे बस्ते लेकर स्कूल नहीं जायेंगे और अखबार के पन्ने पलटने की जहमत से मुक्ति मिल जायगी। नब्बे प्रतिशत पाठ्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक के रूप में होगा। भारत के प्रकाशकों ने इसके लिए अभी से कमर कस ली है।

—अशोक के० घोष, उपाध्यक्ष,
इण्टरनेशनल पब्लिशर्स एसोसिएशन

प्रकाशकों के समक्ष समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण गम्भीर ग्रन्थों का न बिकना है। यह बात तब है जब कि अंग्रेजी साहित्य हिन्दी से महँगा है। इसलिए ज्यादातर हिन्दी प्रकाशक केवल सरकारी खरीद के सहारे अपनी गुजर-बसर कर रहे हैं। केवल सरकारी खरीद के भरोसे हिन्दी प्रकाशक हिन्दी साहित्य को आगे नहीं ले जा सकते। **—नरेन्द्र मोहन,** सदस्य, राज्यसभा,
संपादक, जागरण

पाठकों पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव बढ़ा है। लेकिन ऐसा नहीं है कि पुस्तकों के पाठक नहीं हैं। पाठक हैं लेकिन उनके अन्दर संवेदना के विकास की जरूरत है। यदि संवेदना का विकास नहीं होगा तो कोई भी संस्कारवान देश अपना विकास नहीं कर सकेगा। **—गिरिराज किशोर**

अंग्रेजी की पुस्तक खरीदने वालों की क्रय-शक्ति हिन्दी पुस्तक खरीदने वाले से अधिक होती है। हिन्दी का प्रकाशक निजी खरीददार की चिंता नहीं करता और निजी खरीददार महँगी पुस्तक के पास नहीं जाता।

पुस्तक मेलों को सिर्फ मेला ही नहीं रहना चाहिए जहाँ लोग केवल पिकनिक मनाने के लिए जाएँ। ऐसे मेलों से सांस्कृतिक मानसिकता को समृद्धि मिलनी चाहिए। **—डॉ० महीप सिंह**

साहित्य और संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले लेखक की पीठ पर हाथ रखनेवाला कोई नहीं, इसलिए वे हाशिये पर चले गये हैं। बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में राजनीति हमारे समाज के हर हिस्से पर इतनी ज्यादा हावी हो गयी कि समाज को दिशा देने में उसका निर्माण करने में ऐतिहासिक भूमिका निभानेवाला लेखक पूरी तरह सरकारी उपेक्षा का शिकार हो गया है। हुकूमत का ढाँचा, नौकरशाही, राजनेता सारा कुछ तो संस्थागत हो गया है। नतीजन देश के विकास में उन लोगों की कोई भूमिका नहीं रही। ऐसे में लेखकों की खोज खबर रखने की फिक्र भी मर गयी।

अनेक लेखक स्तरीय लेखन कर रहे हैं, लेकिन समाज ने उनके लेखन को अपनाया ही नहीं है, जबकि बंगला भाषा में रचे जा रहे साहित्य के पाठक काफी हैं इसलिए वह खूब फल-फूल रहा है।

हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में जो कुछ लिखा जा रहा है, उसकी जानकारी सामान्य पाठक को बहुत कम होती है, जबकि अंग्रेजी का प्रचार बड़े जोर-शोर से किया जाता है। खेद की बात यह है कि हमारे यहाँ पाठक वर्ग उतना नहीं है जितना अंग्रेजी में है।

हिन्दी सात प्रदेशों की भाषा होते हुए भी बड़ी संख्या में अपना पाठक वर्ग तैयार नहीं कर पायी है।

धर्म के दो स्वरूप हैं, पहला धार्मिक पुस्तकों में जो लिखा है, दूसरा संस्थागत धर्म। उन्होंने कहा कि गीता, रामायण, उपनिषद, प्रेरणादायक हैं, लेकिन संस्थागत धर्म में अनेक स्वार्थ जुड़ जाते हैं।

देश की आजादी के समय कुर्बानी का जज्बा था लेकिन आजादी के बाद वह जोश ठण्डा पड़ता गया। आजादी के आन्दोलन में अहम भूमिका निभाने वाले लोग हाशिये पर डाल दिये गये और उनकी भूमिका समाप्त हो गयी।

मीडिया पर अंग्रेजी हावी है इस भाषा में लिखी गयी साधारण रचना भी चर्चा का विषय बन जाती है, जबकि हिन्दी में उत्कृष्ट रचना की खबर तक पाठकों को नहीं हो पाती। **—भीष्म साहनी**

प्रकाशकों के बीच उपजा भ्रष्ट तंत्र इतना अधिक शक्तिशाली हो गया है कि उसे तोड़ना मुश्किल नजर आता है। जब तक यह भ्रष्ट तंत्र टूटेगा नहीं तब तक पुस्तकों और विशेष रूप से हिन्दी पुस्तकों का भविष्य उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। इस भ्रष्ट तंत्र को तोड़ना ही होगा। हो सकता है कि जब यह तंत्र तोड़ा जाए तो कुछ समय के लिए संक्रांति काल उत्पन्न हो जाए, लेकिन अंततः स्थिति सुधरेगी। भारत में पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में सरकार की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, पर फिलहाल सरकार इस संदर्भ में जैसी भूमिका का निर्वाह कर रही है वह तो निराशाजनक ही है। पुस्तकों के संदर्भ में सरकार की जो भूमिका है उससे भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के प्रति आम पाठकों के बीच कोई प्रेम उत्पन्न होने वाला नहीं है।

—दैनिक जागरण

इस सहस्राब्दि का पहला पुस्तक मेला इस उम्मीद के साथ खत्म हुआ कि इंटरनेट के युग में भी पुस्तकें नहीं मरेंगी।

मेले में प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव, केन्द्रीय जाँच ब्यूरो के पूर्व निदेशक जोगिन्दर सिंह, नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन, भारत रत्न से सम्मानित परमाणु वैज्ञानिक अबुल कलाम, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर विमल जालान, खुशवंत सिंह, अरुंधति राय, विक्रम सेठ, शोभा के प्रसार भारती के पूर्व कार्यकारी अधिकारी एस०एस० गिल, तसलीमा नसरीन, महाश्वेता देवी की पुस्तकों ने सामान्य पाठकों का अधिक ध्यान खींचा।

भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान

सद्युम्न आचार्य

आधुनिक विज्ञान के आलोक में भारतीय दर्शनशास्त्र के विविध सिद्धान्तों का निरूपण इस ग्रन्थ का प्रमुख उद्देश्य है। भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित दर्शन के अनेक सिद्धान्त नवीन परिप्रेक्ष्य में पुनः प्रतिष्ठित हो सकते हैं।

उनका क्रमबद्ध विकास तथा भौतिक विज्ञान के साथ समन्वय ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है। प्रस्तुत ग्रन्थ उन अध्येताओं के लिये अनमोल है जो दर्शन की मान्यताओं पर क्रमिक विवाद तथा उन पर आधुनिक वैज्ञानिक सम्मति को स्वल्प समय में जान लेना चाहते हैं।

पुस्तकालय संस्करण : **दो सौ पचास रुपये**
साधारण संस्करण : **एक सौ पचास रुपये**

प्रख्यात तमिल लेखक **डॉ० इंदिरा पार्थसारथी** (डॉ० रंगनाथन पार्थसारथी) को के०के० बिड़ला फाउंडेशन द्वारा वर्ष 1999 का 'सरस्वती सम्मान'। पुरस्कार में पाँच लाख रुपये की राशि।

■ ■ ■

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं कथाकार **काशीनाथ सिंह** को ग्वालियर में मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ ने सम्मानित किया। उन्हें प्रसिद्ध कहानीकार राजेन्द्र यादव ने शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में उपस्थित श्री सिंह के बड़े भाई प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि काशीनाथ सिंह ने जो कार्य किया वह मैं नहीं कर पाया।

इस अवसर पर काशीनाथ के कथा साहित्य पर केन्द्रित पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ।

बुकर पुरस्कार

दक्षिण अफ्रीका के उपन्यासकार **जे०एम० कोयत्जी** को उनकी कृति 'डिस्ग्रेस' के लिए ब्रिटेन के प्रतिष्ठित साहित्यकार पुरस्कार 'बुकर' के लिए चुना गया है।

संस्कृति-पुरुष सम्मान

पूर्व केन्द्रीय गृहसचिव और अब विश्व बैंक के कार्यकारी निदेशक **बी०पी० सिंह** को सुलभ इंटरनेशनल सामाजिक सेवा संस्थान ने पहले 'संस्कृति-पुरुष सम्मान' के लिए चुना है।

इकबाल सम्मान

प्रसिद्ध उर्दू उपन्यासकार और लघु कथा लेखक **जोगिन्दर पाल** को इस साल के मध्यप्रदेश सरकार के इकबाल सम्मान से सम्मानित किया गया है।

दयावती मोदी पुरस्कार

सुप्रसिद्ध गजल गायक **जगजीत सिंह** को वर्ष 1999 के दयावती मोदी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अब तक पाँच प्रसिद्ध हस्तियों अमिताभ बच्चन, मदर टेरेसा, रवि परांजपे, सतीश गुजराल और पं० जसराज को यह सम्मान दिया गया है।

समाज सेवा सम्मान

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा निबन्धकार **डॉ० विवेकी राय** को स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाज सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

व्यास पुरस्कार तथा
पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार

संस्कृत के प्रख्यात लेखक **डॉ० सुद्युम्न आचार्य** को म०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा व्यास पुरस्कार आपकी प्रसिद्ध मौलिक संस्कृत कृति 'अधिविज्ञान दर्शनशास्त्रम्' पर प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त डॉ० आचार्य की नवीनतम हिन्दी कृति 'भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान' पर पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० सी०एल० खेत्रपाल ने प्रदान किया।

डॉ० आचार्य का यह ग्रन्थ आधुनिक विज्ञान के आलोक में भारतीय दर्शन के अध्ययन के लिए प्रतिमान है।

सेतु सम्मान

भोजपुरी के प्रतिष्ठित कवि **चन्द्रशेखर मिश्र** को मारीशस की राजधानी पोर्टलुई में आयोजित द्वितीय भोजपुरी विश्व सम्मेलन 2000 का सर्वोच्च सम्मान 'सेतु सम्मान' प्रदान किया गया।

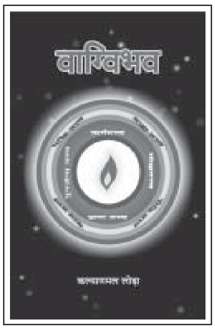

वाग्विभव

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

दो सौ रुपये

'वाग्विभव' वस्तुतः लेखक की परिपक्व प्रज्ञा का प्रसाद है। गूढ़ गहन दर्शन को व्यावहारिक जीवन दर्शन के स्तर पर उतारने में लेखक को अपूर्व सफलता मिली है। लेखक की यह अष्टाध्यायी निष्पत्ति सत्य के साक्षात्कार का श्रेष्ठ उपक्रम है। —**डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित**

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

विभिन्न तत्त्वों का विश्लेषण इस अनुपम ग्रंथ में किया गया है। —**स्वामी सत्यानन्द**

समन्वय सेवा ट्रस्ट, हरिद्वार

भारतीय वाङ्मय

त्रैमासिक

वर्ष : 1 अप्रैल-मई-जून 2000 अंक : 2

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 20.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2000

15 पैसे का डाक टिकट लगायें

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 • Fax : (0542) 353082 • E-mail : vvp@vsnl.com • vvp@ndb.vsnl.net.in